इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक (१३२) वे ४८ (३०४)

ग्रंथ नाम गुरुगीता.

गीता गुरु.

विषय म. वेदांत.

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

क्र. ११

वेदांत

रंगनाथशिष्यकृत गुरुगीता

देवापाडे अर्थे पाठ

४३४/वे.४६

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishtan, Mumbai."

(1)

श्रीगणेशायनमः॥श्रीगुरवेनमः॥श्रीसरस्वत्यैनमः॥
श्रीरामायनमः॥ॐ नमोसद्गुरु परब्रह्म॥तुनिर्विकल्प
कल्पद्रुम॥हरहृदयनिश्रामधाम॥निजमूर्तिरामतुस्व
ये॥१॥तुझाअनुग्रहजयाघडे॥तयानाहिंकांहिसाकडे॥
दर्शनमोक्षद्वारघुघडे॥तुझेनीपरिपाडेतुचिंतु॥२॥
कोणयेकेदिवसि॥श्रीसदाशिवकैलासि॥ध्यानस्त
असतामानसि॥पुसेतयासिपार्वति॥३॥जयजया

Joint project of Rajavade Sanshodhan Mandal, Dhule and Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. Sponsored by Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

गी.

१ जिपरात्परा॥ जगत्गुरु कृपेरगोरा॥ गुरुदिक्षानिर्वि
कारा॥ श्रीरांकरामजदेयि॥४॥ कवणेमार्गे जिस्वामि॥
जीवब्रह्मरोतिलेमि॥ पुसतरसतिसांगिजेअम्हि॥ अं
(2) तर्यामिकळेअैसे॥५॥ कराविअनाथनाथा॥ म्ह
णेनिचरणिठेविलामाथा॥ नासोनियाभवव्यथा॥
कैवल्यपंथामजदावि॥६॥ ईश्वरम्हणेवोदेवी॥ तुझि
अवडिमातेवदवि॥ लोकोपकारकप्रश्नपुर्वि॥ देविदा

(2A)

नवजोनकेला ॥ ७ ॥ तरिदुलेभयात्रिभुवनाथ ॥ ते
नुअेकेवोनिश्चित ॥ सद्गुरु ब्रह्मसदोदित ॥ सत्यसत्य
वरानने ॥ ८ ॥ वेदशास्त्रपुराण ॥ मंत्रयंत्रादिविद्या
नाना ॥ करितातीर्थतपस्तसाधना ॥ भवबंधमो
चनानपवति ॥ ९ ॥ देवऋषिकेजगमादिके ॥ अनेकम
तेअपभ्रंशके ॥ समस्तजीवाभ्रांतिदायके ॥ मोक्षप्रा
प्तकनव्हतीच ॥ १० ॥ जयाचाठपराभक्ति ॥ तेणेस

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Institute of Marathi Studies, Pune University, Mumbai

गी.

२ दुरशेवावायेकांति॥ गुरुतत्वनजाणति॥ मूढमति
जनकोणि॥९१॥ होवोनियानिःसंशय॥ शेवावेसदुर
(3) पाय॥ भवसिंधुतरणोपाय॥ लाकालरोयजजीवा॥९२॥
गुढअविद्याजगन्माया॥ अज्ञानखरारितजीवया॥ मोरोधकार
गुरुसूर्य॥ सन्मुखयावयामुखकेचे॥९३॥ जीवब्रह्मत्याचिकृ
पा॥ होनोनिरसुनिसर्वपापा॥ त्वदुरुस्वयंप्रकाशदीपा॥ श्र
रणनिर्विकल्पाविद्यावे॥९४॥ सर्वतिर्थाचेमाहेर॥ सद्गु

२

Rajavade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. Digitized by Eka Tarfe Foundation

(3A)

रुचरतीर्थ निरंतर ॥ सभ्दावे सत्शिष्य निरंतर ॥ सेवि
तापरंपारपावले ॥ १५ ॥ दोषपापपंकाचे ॥ ज्ञानतेज
करिसाचे ॥ वंदिता चरणतीर्थ सद्गुरुचे ॥ भवाब्धिचे
भयकाय ॥ १६ ॥ अज्ञानमलकारणं ॥ जन्मकर्मनिवारणं ॥
ज्ञानसिद्धिचेकारण ॥ गुरुचरतीर्थते ॥ १७ ॥ गुरुच
रणतीर्थप्राशन ॥ गुरुअज्ञाउच्छिष्टभोजन ॥ गुरुमूर्ति
चेअंतरिध्यान ॥ गुरुमंत्रवदनिजपसदा ॥ १८ ॥ गुरुसा

Rajadinkar Sansodhan Mandal, Dhule and the Dr. Vasantrao Dhavan Pratishthan, Mumbai. Digitized and Hosted on behalf of the project owner.

गी

३ निध्यतोकाशिवास ॥ जान्हवीचरणोदकनिर्दोष ॥
गुरुविश्वेश्वरनिर्विशेष ॥ तारकमंत्रउपदेशितो ॥ १९ ॥
(५) गुरुचरणतीर्थपिउसिरि ॥ प्रयागस्नानेनिर्धारि ॥ गयाग
दाधरसबाह्यांतरि ॥ सर्वतीर्थसाधका ॥ २० ॥ गुरुमूर्तिनित्य
स्मरे ॥ गुरुनामजपअंतरे ॥ गुरुअर्चापालकनरे ॥ तेणिजेहस
रेंगुरुविना ॥ २१ ॥ गुरुस्मरणसुविचारे ॥ तोचिब्रह्मरूपपारे ॥
गुरुमूर्तिध्यानिवारे ॥ जेसिकाहेस्वैरणि ॥ २२ ॥ वर्णाश्रमधर्मि
सत्कीर्ति ॥ पाठवाविसदाचारि ॥ अन्यत्रत्यजुनिगुंति ॥ सद्गुरु

३

भक्तिकरावि ॥२३॥ अनन्यभावे गुरुसि भजता ॥ सुखभप
रमपदतत्वता ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नें अला ॥ सद्गुरुनाथा अराधि ॥२४
गुरुमुखिचें महावाक्यबीज ॥ गुरुभक्तिस्तव लाभें सहज ॥
त्रैलोकीनाथें भोज ॥ तो होय सुरनरा ॥२५॥ ओंकार
तो अज्ञानांधकार ॥ ओंकारवर्णतो दिनकर ॥ स्वप्रकासे
तेजासमोर ॥ तरा हेतिमिर क्षणभरि ॥२६॥ प्रथमओंकार
शब्द ॥ तो गुणमयि मायापरमद ॥ ओंकारतो ब्रह्मानंद ॥ करवि
छेदमार्ग ॥२७॥ ऐसे गुरुपदश्रेष्ठ ॥ देवादिदेव उत्कृष्ट

गा.

४ गणगंधर्वादिनरिंद्र। महिमास्पष्टनेणनी।२८।रा
श्चतसर्वसिद्धाहि। एकुपरलेवत्वनाहि। का यावा
(5) चामनेपाहि। श्रीविनाहिसमर्पावे।२९।देहादि
भुवनत्रयसमस्त। इतरपदार्थनाहिवंत। नेचानि
याविमुखहोत। अ[illegible]त घडैतपा।३०।हणो
नीअराधावाश्रीगुरु। करुनिर्दीघदंडवत्नमस्
कार। निर्ज्जहोनाभिपरात्परु। भवसागरउ
नरावा।३१।आत्मदारादिकंचैव। निवेदनकरो
निसर्व। होनाहिजयाअनुभव। त्याहिअभिनव

४

(5A)

वाटवसानने ॥३२॥ जेसंसारवृक्षाकूट जाहाले ॥ ते
पतनमकर्णिनपावले ॥ ते गुरुराये बुध्दले ॥ सुनि
केले निज भजनि ॥३३॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ॥
गुरुकृपते स्वयंमेव ॥ गुरुपर ब्रह्म सर्वथैव ॥ गुरुगोरन
नि मवर्णवे ॥३४॥ अज्ञानतिमिरांधपज्ञानांजनशला
काषं प्रसिद्ध ॥ उदित्य चक्षुरुन्मीलित ॥ सहिनिधदास
विरा ॥३५॥ अखंडमंडलाकार ॥ जेणे व्यापिले चराचर ॥
नयेपदिकेले स्थिर ॥ नमस्कार गुरुवर्या ॥३६॥
श्रुतिसारासि सारत्न ॥ त्यरेंबुजपरमपावन ॥ वेदांतक
र्णा

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Kanwarlal Chandak Charitarth Trust, Mumbai.

मकणी चद्रा न ॥ सया नमन गुरुवर्या ॥ ३७ ॥ ज्या च्या स्मर
णमात्रे ज्ञान ॥ साधकाहोय उत्पन्न ॥ जे निज संपति जाण ॥ दिध
ले संपूर्ण गुरुराये ॥ ३८ ॥ चैतन्य शाश्वत शांत ॥ नित्य निरंजन
अच्युतानंत ॥ नादबिंदु कलातीत ॥ नमन प्रणिपात गुरुवर्या ॥ ३९ ॥
ज्ञानशक्ति समारूढ ॥ तत्त्वमाला भूषित दृढ ॥ भुक्तिमुक्ति
दाता प्रौढ ॥ सद्गुरु गुरुसुखदायिने ॥ ४० ॥ अनेक जन्मिचे
सुकृत ॥ निरहंकृति निरत ॥ तरिच बोध प्राप्त ॥ जरि श्री
गुरुस्तम स्तकि ॥ ४१ ॥ जगन्नाथ जगद्गुरु येक ॥ जो माझा
स्वामि देशिक ॥ परमात्मा सर्वभूतव्यापक ॥ वैकुंठनायक श्रीगुरु

The Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(GA) ॥४२॥ ध्यानमूलं गुरुर्राय। पूजामूलं गुरुपाय। मंत्रमूलं
निःसंशय। मोक्षमूलं गुरुकृपा ॥४३॥ सप्त सिंधु अनेक तीर्थि।
स्नानेपानेजे फळप्राप्ति। ये बिंदुसमन पवति। सद्गुरुचरण
तीर्थाच्या ॥४४॥ ज्ञानेविना सायोज्यपद। अलभ्यलाभे
अगाधबोध। सद्गुरुभक्तिबोध। स्वतःसिद्धपाविजे
रु ति ॥४५॥ सद्गुरुनिपरोक्षपरा। नाहि नाहि वोसाचार। ने
ति राहे निरंतरे। श्रुति साचारगर्जति ॥४६॥ सत्दंभार
ब गर्वकरूनि। विद्यातपेंकरूनि। संसारगुरुराहति
पजोनि। नानायोनिभ्रमाताति ॥४७॥ नमुक्तदेवगंधर्व

Joint project of Tulpule Family and Re-Imagine Chiplunkar Foundation

नमुक्त यक्षचारणादिसर्व ॥ सद्गुरु कृपेने अपूर्व ॥ सायुज्य वैभव
पाविजे ॥ ४९ ॥ ऐके बोधे विध्यान ॥ सुखसर्व निंद्रप्रदायक ॥ सो
हमा यार्णवतारक ॥ चित्सुखकारक श्रीगुरु ॥ ४९ ॥ ब्रह्मानं
दपरमाद्भुत ॥ ज्ञानमूर्ति द्वंद्वातीत ॥ नीरतीशयसुखसंतत ॥
साक्षभूतसाद्गुरु ॥ ५० ॥ नित्यशुद्धनिराभास ॥ नित्यबोध
चिदाकाश ॥ नित्यानंदस्वरूपाश ॥ सद्गुरु ईश सर्वांचा ॥ ५१ ॥ प्र
हृदयकमळि सिंहासनि ॥ सद्गुरुमूर्ति चिंता विध्यानि ॥
श्वेतांबर दिव्यभूषणि ॥ ज्ञेद्रिय करणी सुशोभित ॥ ५२ ॥
अनंदमानंदकरप्रसन्न ॥ ज्ञानस्वरूप निजबोधपूर्ण ॥
भवरोगभेषजजाण ॥ सद्बोध चित्घन सद्गुरु ॥ ५३ ॥

(74)

सद्गुरु परते अधिक काहि। अहे ऐसा पदार्थ नाहि। अवलो
कि ला दिशा दाहि। नदिसे तिहि भुवनांपि।५४। प्रसाद जे प्र
ज्योत्तर। गुरु सिवे दादि लिनर। ते भागि ति नरक निरंतर।
यावच्चंद्र दिनमणि।५५। आरण्यानि जे उस्थानि। श्रमति
ब्रह्मराक्षस होयोनि। गुरु सिवा जे नीउ घट वाणि। एक व
चनि सर्वदा।५६। हे भ्रातृ देव ऋषि का का। सद्गुरु रक्षिनल
ग ताप का। दिनानाथ दिनदयाक। भक्तवत्सल श्रीगुरु।५७।
सद्गुरु चा क्षोभ होता। देव ऋषि मुनि लवता। रक्षिति हे दु
वर्ति। मुख्य हि सर्व नायकति।५८। मैत्रराजे देवि। गुरु

Shri Shantinath Digambar Jain Mandal, Dhule and the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule. Digitized by Sarayu Foundation

गी.

(७)

हे होनि अक्षर बहु वि। वेदार्थ वचने जाणावि। ब्रह्मपद विप्रसिद्ध। ५९।
श्रुतिस्मृति न जाणति। उरु भक्ति चि परम प्रीति। वेस न्यासि
निश्चिति। इतर दुर्मति वेरु धारि। ६०। नित्य ब्रह्म निरंकार रा
निर्गुण बोध परात्पर। तैसा दुरु पूर्णावतार। दिपा शि दिपां
तरना हि जैसा। ६१। उरु कृपा प्रसादे। निजात्म दर्शन स्वानंदे
पावोनि या पूर्ण पदे। [illegible] युक्ति शि। ६२। अब्रह्म
स्तंभ पर्यंत। स्थावर जंगमादि पंचभूत। सच्चिदानंद अ
द्वय अव्यक्त। अच्युतानंत श्रीगुरु। ६३। परात्परतर ध्यान।
नित्यानंद सनातन। हृदयसिंहासनि बैसवुन। चिंतिचिं

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

न करावे ॥ ६४ ॥ अगोचर अगम्य सर्वगत ॥ नामरूपविव
र्जित ॥ निरशुद्ध ज्ञानमि भ्रांत ॥ ब्रह्म सदोदित पावीति ॥ ६५ ॥
अंगुष्ठमात्र पुरुष ॥ हृदयिध्यातास्वकाश ॥ तेथे स्फुरति
भावविशेष ॥ निर्विशेष पावीति ॥ ६६ ॥ ऐसे ध्यान करिता
नित्य ॥ लाहरा होय सत्य ॥ कीठकि भ्रकुटिध्यानि मित्य ॥
तद्रूप जाति तैजैसि ॥ ६७ ॥ अथ तेकिता तया प्रति ॥ सर्व
संगविनिर्मुक्ति ॥ एकांकि निस्पृह शांति ॥ आत्मचिंति
रा होवे ॥ ६८ ॥ सर्वज्ञ पदत्या बोलति ॥ जेणे देहि ब्रह्म होति ॥
सदानंदस्वरूप शांति ॥ योगिरमति पैजेथे ॥ ६९ ॥ उपदेशलोहा
पावीति ॥ गुरुमोगे होय मुक्ति ॥ ऐसा निकरावे गुरुभक्ति ॥

(8A)

Jnanshwar Mandal, Dhule Branch
Rajaram Shivaram Chavan Pratishthan's Library
Rajaram College, Kolhapur

गी.

॥ ६१ ॥

हेतुनप्रति बोलतसे ॥ ७१ ॥ जेबोलिलोमितुज ॥ तेगुजाचेनिज
गुज ॥ लोकोपकारकसहज ॥ हेतुबसुबसानमे ॥ ७२ ॥ लौकीकफ
लनिहीन ॥ तेथेकैचेअसमान ॥ गुरुभक्तारिसमाधान ॥ पुण्य
पावनअैकांते ॥ ७३ ॥ एवंयाभक्तिभावे ॥ श्रवणपठणमुखस्वे ॥
ऐसेबोलतिसदाश्रि ॥ ओलतिअनुभवेगुरुभक्त ॥ ७३ ॥ गुरु
गीताहेदेवी ॥ ऊर्ध्वतत्वपूर्णपदवि ॥ सर्वव्याधिविनाशनि ॥ स्व
यंमेवजपेसदा ॥ ७४ ॥ गुरुगीतेचेअक्षरमेक ॥ मंत्रराजतासंम्यक ॥ अन्य
मंत्रदुखदायक ॥ मुख्यनामकमहामंत्र ॥ ७५ ॥ अनंतफलेपार्वति ॥
गुरुगीताहेपार्वति ॥ सर्वपापविनिर्मुक्ति ॥ दुखदारिद्रनाशिनि ॥ ७६ ॥
कालमृत्युभयहर्ति ॥ सर्वसंकटनाशकर्ति ॥ अक्षराक्षरमंत्रभुति ॥
निर्भयप्राप्तिसर्वदा ॥ ७७ ॥ महाव्याधिविनाशनि ॥ विभुतिसिद्धि

(१)

६

दायिनि। अथवा वशिकरणमोहनि। पुण्यपावनसर्वदा।७५।
कुश अथवा दूर्वासन। कंबल समसमान। एकाग्रकरमिया
मन। सद्गुरुध्यान करावे।७६। शुक्लशांत्यर्थ जाणा। रक्तासन
वशीकरणा। अभिकृष्णावर्णा। पीतवर्णधनागमि।८०। शांत्य
र्थ उत्तरामुख। वशिकर पूर्वदेव। दक्षिणेमारण उच्चाटख। धनाग
मनमुखपश्चिमे।८१। मोहनसर्वभूतासि। बंधमोक्षकर विरो
धि। राजावश्यनिश्चयेसि। श्रीपदवासिसर्वदा।८२। स्तंभनका
रक जप। गुणविवर्धन निर्विकल्प। दुष्टकर्मनाशक अमुप।
सुखस्वरूपसनातन।८३। सर्वशांतकरविपद। बंधमुक्तकर
प्रद। अवैधव्यसौभाग्यप्रद। अगाधबोधजपलाहे।८४। अ

(9A)

श्री.

९

युध्य अरोग्य ऐश्वर्य। पुत्र पौत्र धैर्य दार्य। विधवा जपत परमाश्चार्य।
मोक्ष सर्व पावति। ८५। अथ वैधव्याचि कामना। धन्य ना होय पूर्ण वासना।
सर्व दुख भय विघ्ना। पासो नि सुजना सोडवि। ८६। सर्व बाधा प्रशम
निप्रत्यक्ष। धर्मार्थ काम मोक्ष। जे जे चिंतीले तो पक्ष। गुरुदास दक्षपाव
(१०) ति। ८७। कामि कामधेनु गय। कल्पि ते जे कल्पतरु होय। चिंतिल्या
चिंतामणिमय। मंगलमय सर्वदा। ८८। गणपत्य राक्षस चोर। रौ
द्र वैष्णव गुण किंकर। सिद्धी पावति सत्वर। सत्य सत्य वरानने। ८९।
संसार मलना रार्थ। भव बंध पाश छेदन। गुरुगीता श्रवणे सुज्ञाने।
सुचिस्मित सर्वदा। ९०। अस्ति राय नि गमनागमनि। अश्वगज
अथवा पायनि। जा यति अणि सुषुप्ति। स्वप्नी पठता होय शांति। गुरुगीता। ९१।
गुरुगीता पठता भक्त। सर्व तो जिव मुक्त। त्या च्या दर्शने पुनित।

पुनर्जन्म नहोत प्राणीया ॥९२॥ अनेक तिर्थे समुद्र कुदरि ना ना
थे नुक्षीरक्षीरी ॥ अभिन्नरूपे निर्धारि ॥ सर्वांतरिये कचि ॥९३॥
घटाकाश मठाकारा ॥ उपाधि भेदे भिन्न वेष ॥ महदाकारो निर्वि
शेष ॥ द्वैताचा उव नाढळे ॥९४॥ भिन्नाभिन्न प्रकृति ॥ कर्मवशे
दिसति अकृति ॥ येकुनि जीवपणाचि बुंथि ॥ जैव बधभासति नाम
रूपे ॥९५॥ नाना अडंकारि सर्वांगी ॥ जैसा जीवात्मा पूर्ण ॥ तेथे
नाहि वर्णाविर्ण ॥ कार्यकारण नोलते ॥९६॥ ज्ञ स्यानुभवे उरुंक ॥ भ
वतीतो जिवन्मुक्त ॥ तेथ रूप वेदोक्त ॥ जेविरक्त सर्वत्रे ॥९७॥
अनन्य भावे गुरुगीता ॥ जेपला सर्व सिद्धि लभता ॥ मुक्तिदा
यक जगन्माता ॥ संसैय सर्वथा नधरिजे ॥९८॥ सत्य सत्य देव
मी ॥ जे बोलिलो सर्वधर्मी ॥ नाहि गुरुगीते सम ॥ सत्य परम सद्गुरु ॥९९॥
येक देव येक जप ॥ येक निष्ठा परंतप ॥ सद्गुरु परंस्वरूप ॥ निर्विकल्प कल्प
तरु ॥१००॥

(10A)

माताधन्यपिताधन्य। याति कुळ वंशधन्य। जेथि नसुरेविधन्य। धन्य
धन्यगीता। ७। गुरुपुत्र अपंडित। जरि मुर्ख तो निश्चित। त्याचेनि सर्वका
र्यसिद्धि होत। तासि ध्यांत वेदवचनि। ८। शरीर स्त्रीप्राण। दारापुत्र
कांचन धन। सद्गुरुचरणावरुन। वोवाळुन सांगवे। ३। अकल्पज
न्म कोडि। येकाग्र जपता प्रौढि। तयासति फळ जोडि। गुरु स अर्धघडि
सुख नोहे। ४। ब्रह्मादिकदेवसमर्थ। त्रिभुवनि वंद्य यथार्थ। गुरु
चरणावेगळे व्यर्थ। अन्य तीर्थ सर्व रथक। ५। सर्व तीर्थ तीर्थश्रे
ष्ठ। निवारि संसारकष्ट। पूर्वि आभेष्टदिधिले। ६। हे रहस्य वाक्य तु
जपुढे। म्या कथिले निजनिवाडे। माझे निजतत्व गोप्य वुचडे करोनि।
वाडे कोडे दाखविले। ७। सुरगणे ऋषि वैष्णव। यक्षकिन्नरगणगं
धर्व। तयासहि सर्वथैव। हे अपूर्व नवदेमि। ८। अभक्त वंचक धूर्त।
पाषंडि नास्तिक दुष्ट। तयासि बोलणे अनुचित। हा गुरुमार्ग पैभास। ९।

श्रीगुरुचरणांगुष्ठ। वंदन

सर्वशास्त्राचे मथिल। सर्ववेदांतसंमत॥ सर्वस्तोत्रासि अर्थ। मु
तिमिंलगुरुगीता। ९०। सकळभुवनेश्वरि। पहातावेकसमेष्टि॥
मोक्षमार्गहि दृष्टि। चरणांगुष्ठि सद्गुरुच्या। ९१॥ उत्तरखंडिकें
दुराणी। दुश्चरसंसारपावितियाणि॥ गुरुगीतेकताश्रवणी। गी
विश्वतारणी चिद्रूपा। ९२॥ गुरुगीतानित्यपठे। तयासाकडे
कवणपडे। लक्षात्मोक्षद्वारघडे। ऐक्यघडे शिवस्वरूपि। ९३॥
हि नमणाविप्राकलवाणी। केवकथात्मसुखाचिखाणि।
सर्वपुविरिसाणि। जैसावासरमणितमनासि। ९४। श्रोतयाव
कथाविद्वजना। अनन्यभावेविसापना। न्युनपूर्णनानिलामना।
क्षमादिनावरिकिजे। ९५। गुरुगीतेचिटिका। नमणाविजि
पुण्यश्लोका। पदपदार्थपहातानिका। दृष्टिसाधकादिसेना। ९६।

Prof. Raghavendra Gajendragadkar Collection, Chennai. Digitized by Madras Digital Library. Funded by Arunachalam Foundation, Chennai.

अवडिचीजातवेडि॥वाचेअडेलेबडबडि॥मूळग्रंथकळोविकडि॥ते
९९ पहातातडिप्याकेडि॥१७॥नाहिव्याकर्णअभिनिवेश॥नाहिसंस्कृति
प्रवेश॥श्रीटपणेंडिहिताद्वेषा॥गमळविरोषमनाते॥१८॥परिस
त्रागिकेलियायासवे॥हेपंडितजनिंचुपसाहे॥उपेक्षाकरोनिसर्व
भावे॥अवदानद्यावेदयोडुवे॥१९॥विक्रमनामसंवत्सरि॥भाद्रप
दमासिश्रयुवारि॥वद्यचतुर्थीवासरि॥ग्रंथजाळासमाप्त॥२०॥
(12)
अनंदसंप्रदायवंशोद्भव॥संध्यंद्रनरवेअभिनव॥गुरुगीते
चाअनुभव॥हृदयस्वयंमेवप्रगटला॥२१॥सहजपूर्णनिजानंद
रंगळालोसाधुवृंद॥श्रवणकरावास्वछंद॥ग्रंथनिर्द्वंद्वगुरुगिता॥२२॥
श्रीसद्गुरुसंगनाथार्पणमस्तु॥श्रीमंतरावसाहेबकोळेवाडिकर
यांसहिपोथिवाळंभटजिनिगडिकरयानिलिहूनिदिद्धुअसे

स्वार्थपरोपकारार्थ॥ शुभं भवतु॥ शके १८०८ व्ययनामसंवत्स
(12A) रे॥ दक्षिणायने॥ आषाढमासे॥ कृष्णपक्षे॥ षष्ठ्यां तिथौ॥ गुरु
वासरे॥ नद्दिनि॥ सालारमकामि॥ ग्रंथ॥ पूर्णजाहाला॥ रस्तु॥

"Joint project of the Rajaram Shastri Joshi and Vishwanath Chavan Pratishthan, Mumbai."

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com